Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 10/March/2023 IJRAW: 2023; 2(4):80-83 Accepted: 16/April/2023

गंगा घाटी की मध्य पाषाणिक संस्कृति का अवलोकन

*[1]डॉ0 अनिल कुमार यादव

**[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, संस्कृति, पुरातत्व विभाग पी0जी0 कालेज, पट्टी, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य गंगा घाटी की मध्य पाषाणिक संस्कृति का विश्लेषण करना है क्योंकि सराय नाहर राय, महदहा और दमदमा के सन्दर्भ में शिक्षार्थियों को पर्याप्त ज्ञान नहीं प्राप्त हो पाता है। इसलिए इस अध्ययन में मध्य पाषाणिक संस्कृति के विषय में विस्तृत और व्यापक वर्णन किया है ताकि नए शोधार्थियों को भी इस विषय की जानकारी प्राप्त हो सके।

मुख्य शब्दः सराय नाहर राय, महदहा, दमदमा, गंगा घाटी, शव, चूल्हे

प्रस्तावना

मध्य पाषाण काल में भी मानव का विकास गंगा घाटी में हुआ। अतः गंगा का विशाल मैदान हिमालय पर्वत तथा दक्षिण के पठारी भाग के बीच स्थित है। यह मैदान गंगा–यमुना और उनकी अनेक सहायक नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़क (कांप) मिट्टी से निर्मित है। गंगा के जलोढक जमावों को दो भागों में विभाजित किया जाता है।

1. भांगर
2. खादर।

प्रारम्भ में जिस समय गंगा अपनी घाटी का निर्माण कर रही थी। उस समय भांगर उसका किनारा था। खादर गंगा की आधुनिक वेदिका है जिसमें वनस्पतियों का अंश अधिक है।

भौगोलिक बनावट की दृष्टि से गंगा के मैदान को तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है।

1. ऊपरी गंगा घाटी
2. मध्य गंगा घाटी
3. निचली गंगा घाटी।

इनमें से केवल मध्य गंगा घाटी में ही मध्य पाषाण काल के लघु पाषाण उपकरणों के सम्बन्ध में अनुसंधान हुआ है। गंगा के मैदान में अनेक गोखुर झीलें विद्यमान हैं। इन झीलों का निर्माण गंगा उसकी सहायक के मार्ग परिवर्तन के फलस्वरूप परित्यक्त सर्पिल मोड़ों से हुआ है। [1] अनेक झीलें कालान्तर में निक्षेपण के फलस्वरूप पूरित हो गई है लेकिन कतिपय आज भी विद्यमान है। मध्य पाषाण काल में अधिक सुविधाजनक स्थलों को खोजते हुए। विंध्य क्षेत्र से गंगा घाटी में संचरण करते हुए मध्य पाषाणिक मानव ने इन्हीं झीलों के किनारे अपने अल्पकालिक आवास–स्थलों को बनाया था। अतः इस सम्पूर्ण क्षेत्र में उपकरणों के निर्माण के लिए पत्थर नहीं मिलते हैं। अतः अनुमान किया जाता है कि इन पत्थरों को वे विंध्य क्षेत्र से अपने साथ ही लाते होंगे। अभी तक गंगा घाटी में निम्न स्थलों का अन्वेषण हुआ है। अभी तक गंगा घाटी में निम्न स्थलों का अन्वेषण हुआ है। जिसमें प्रतापगढ़ में राजपुर, हड़ही–भिटुली, पतुपुर तथा सरायनाहर राय, इलाहाबाद में कूढ़ा, बिछिया, भीखमपुर, महरूडीह, वाराणसी, जौनपुर में लोहिना, नगौली तथा पुरा गभीरशाह विशेष उल्लेखनीय है। [2] उपर्युक्त स्थल मध्य पाषाणकालीन संस्कृति की प्रथम दो अवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं।

1. अज्यामितिक प्राक् पॉटरी अवस्था

इस अवस्था के उपकरण गढ़वा, कूढ़ा, भीखमपुरा, महरूडीह, हड़ही–भिटुली तथा पतुपुर से प्राप्त हुई है। उपकरण मोटे, चौड़े ब्लेड गढ़ित अथवा अनगढ़ित, बड़े आकार के अर्धचान्द्रिक, स्क्रैपर, भूथड़े पार्श्व ब्लेड, पतले तथा संकरे ब्लेड आदि है। इन उपकरणों का निर्माण मुख्यतः चर्ट पर हुआ है।

2. ज्यामितिक प्राक्पॉटरी अवस्था

इस अवस्था के उपकरण सराह नाहर राय तथा बिछिया से उपलब्ध हुए हैं। उपकरण अत्यन्त अल्पक, भलीभांति गठित तथा नियमित आकार के हैं। जिनके निर्माण में चर्ट चाल्सेड़नी, अगेट, कार्नेलियन, जैस्पर आदि का प्रयोग किया गया है।

सराय नाहर राय

यह प्रतापगढ़ से 15 किमी दक्षिण पश्चिम में मान्धाता के निकट स्थित है। यह गोखुर झील के किनारे पर स्थित है। यद्यपि झील लगभग पूरित हो गई है। इस पुरास्थल की खोज 1969 में उत्तर प्रदेश शासन पुरातत्व विभाग के तत्कालीन निदेशक के0सी0 ओझा ने किया था। यहां पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के जी0आर0शर्मा के निर्देशन में डॉ0 राधाकान्त ने 1971–72 तथा 1972–73 में उत्खनन किया। [3]

***Corresponding Author:** डॉ0 अनिल कुमार यादव

सराय नाहर राय का फैलाव 1800 वर्ग मीटर के अन्तर्गत है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र में लघुपाषाणिक उपकरण बिखरे हुए पाये गये हैं। यहां से 11 मानव समाधियों तथा 8 गर्त चूल्हों; थ्पतम च्पजेद्ध का उत्खनन किया गया। यद्यपि इस स्थल पर अभी भी कम से कम तीन शवाधान तथा चार चूल्हे वर्तमान में ही उत्तर प्रदेश के 'राज्य पुरातत्व संगठन' ने सराय नहर राय के पुरास्थल को कंटीले तार की बाड़ से घेर कर सुरक्षित कर दिया है। शवाधानों के उत्खनन से मध्य पाषाणिक मानव प्रकार तथा उसके कर्मकाण्ड एवं मान्यताओं पर प्रकाश पड़ा है। सभी मृतक विस्तीर्ण स्थित में छिछले, लम्बायत–अण्डाकार गर्तों में पश्चिम–पूर्व दिशा में दफनाये गये थे। सिर सभी कब्रों में पश्चिम की ओर थे। शवों को कब्र में रखने के पूर्व गर्त में 3–4 सेमी मोटी मिट्टी की परत गड्ढे के रूप में बिछाई जाती थी। कब्र को भरने के लिए चुल्हे की मिट्टी, राख आदि का भी प्रयोग किया जाता था। प्रायः सभी मृतकों को कब्र में रखते समय उनका हाथ पेट के ऊपर शरीर के आर–पार रखा जाता था और स्त्रियों का बायां तथा पुरुषों का दाहिना हाथ पेट पर रखा मिला है। जिस विधि से कब्रों को बनाया है, शवों को दफनाया गया है तथा उनके साथ अन्य सामग्री मिली है इससे यह पता चलता है कि कब्र में दफनाने की विधि का विकास हो चुका था। एक समाधि ऐसी थी जिसमें चार मानव कंकाल एक साथ दफनाए गए थे। ऐसा प्रतीत होता है कि एक पुरुष तथा एक स्त्री शव को कब्र में रखने के बाद पुनः पुरुष के ऊपर एक अन्य पुरुष तथा स्त्री के ऊपर दूसरी स्त्री का शव रखकर दफनाये गये थे परन्तु स्त्री दोनों ही अवस्थाओं में बाये ओर है। यहां से कुल 15 मानव कंकालों में से 11 कंकालों के लिंग की पहचान की जा चुकी है, सात कंकाल पुरुषों के तथा चार स्त्रियों के थे। चार कंकाल की पहिचान करना संभव नहीं है। लगभग सभी मृतकों की अवस्था 16 से 30 वर्षों के अन्तर्गत थी। पुरुषों की औसत लम्बाई 173.93 सेमी से 192.08 सेमी थी। स्त्रियों की लम्बाई का औसत 174.89 सेमी से 189.68 सेमी थी।

सराय नाहर राय में 8 गर्त चूल्हों का उत्खनन किया गया। चूल्हों से जानवरों की जली तथा अधजली बहुत हड्डियां मिली हैं। निश्चय ही उनका उपयोग भोज्य सामग्री के रूप में हुआ होगा। चूल्हों गोलाकार, अण्डाकार अथवा अनियमित आकारों के हैं। उनका मुंह चौड़ा तथा पेदी अपेक्षाकृत कम चौड़ी है। ऊपर का माप 1.49 सेमी से 0.72 सेमी है तथा पेंदी 1.02 सेमी से 45 सेमी है। उनकी गहराई सेमी से 25 सेमी के बीच में है। चूल्हों से हिरण, बारहसिंघा, जंगली सुअर आदि पशुओं की अधजली हड्डियां मिली है। इसके अतिरिक्त कछुआ की खोपड़ी के टुकड़े तथा हाथी की एक पसली भी प्राप्त हुई है। इन चूल्हों से केवल राख प्राप्त होती है, कोयले के टुकड़े नहीं मिले हैं। अतः यह प्रतीत होता है कि घास–फूस तथा पत्तियों एवं टहनियों आदि का ईंधन के रूप में उपयोग किया जाता था।

यहां से आवास क्षेत्र में 5×4 मीटर आकार का एक फर्श मिला है। जिससे चारों कोनों पर एक–एक स्तम्भ गर्त मिले हैं। जी0 आर0 शर्मा ने इसको सामुदायिक चूल्हा कहा है क्योंकि इसके फर्श से लघु पाषाण उपकरण, पशुओं की हड्डियां तथा छोटे–छोटे कई चूल्हे मिले हैं। सराय नाहर राय से लघु पाषाण उपकरण अपेक्षाकृत अधिक संख्या में मिले हैं। इन प्राप्त लघु पाषाण उपकरणों में समानान्तर एवं कुण्ठित पार्श्व वाले ब्लेड, बेधक, चान्द्रिक, खुस्पनी, समबाहु तथा विषम बाहु त्रिभुज आदि ज्यामितीय उपकरण है जो चर्ट, चाल्सेडनी, अगेट, जैस्पर आदि पर बने हुए हैं। पशुओं की हड्डियों तथा श्रृंगों पर बने हुए उपकरण इस पुरास्थल से कम संख्या में प्राप्त हुए हैं।

महदहा; डींकींद्धः

यह पुरास्थल प्रतापगढ़ जिले की पट्टी तहसील से 5 किमी उत्तर में महदहा गांव के पूर्व दिशा में लगभग 1 किमी की दूरी पर गोखुर झील के पश्चिमी तट पर स्थित है। यह पुरास्थल 8000 वर्ग मी0 क्षेत्र में फैला हुआ था, जिसे जौनपुर लघुनहर काटती हुई निकली है। सर्वप्रथम इस स्थल की खोज नहर की खुदायी के फलस्वरूप प्रकाश में आया। यहां पर 1978 तथा 1979 में प्रो0 शर्मा के निर्देशन में वी0डी0 मिश्र तथा जे0एन0 पाल ने उत्खनन तथा बचाव कार्य किया था।

यहां पर चार स्थलों पर उत्खनन किया गया है। प्रथम स्थल नहर के पश्चिम में स्थित है, दूसरा स्थल भी नहर के पश्चिम में है। तीसरा स्थल नहर के पूर्व में प्रथम स्थल के सामने स्थित है। चतुर्थ स्थल पुरानी झील के दक्षिण–पश्चिमी कोने में स्थित है। इनमें से प्रथम तीन को क्रमश

1. कब्रगाह एवं आवास स्थल
2. बूचड़ स्थल
3. झील क्षेत्र

आवास स्थल एवं कब्रगाहः

पुरानी नहर के पश्चिम में 'आवास–क्षेत्र' स्थित है जिसमें मानव समाधियां मिली हैं। इस नहर की पूर्व दिशा में वन्य पशुओं की अधजली एवं खण्डित हड्डियां, सींग, श्रृंग तथा दांत इत्यादि मिले हैं। जिसकी वजह से इसको 'वध–स्थल' अथवा बूचड़खाना कहा गया है। सम्भवतः हो सकता है यहां पर हड्डियों को फेंक दिया गया होगा और उत्खनन के समय यह प्रकाश में आई है। उत्खनन से 60 सेमी आवासीय जमाव प्रकाश में आया, जिसे विभिन्न स्तरों की संस्पना तथा रंग आदि के आधार पर चार भागों में विभाजित किया गया। यहां के आवास क्षेत्र में कुल मिलाकर 28 समाधियों और 35 गर्त चूल्हों का उत्खनन किया गया है। उत्खनित कब्रगाहों के अध्यापरोपण के आधार पर उन्हें भी चार वर्गों में विभाजित किया है।

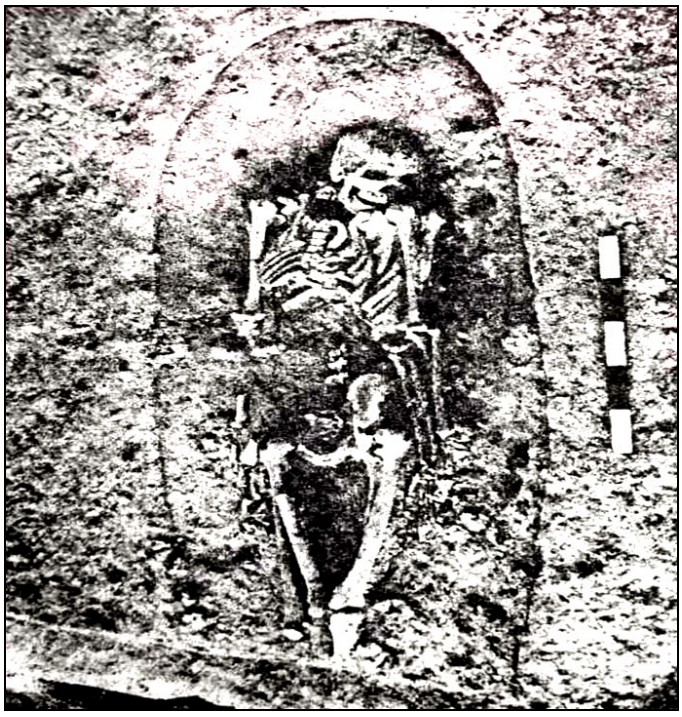

चित्र 1: समाधि स्थित मानव कंकाल जी. आर. शर्मा (1980) के सौजन्य से

सराय नाहर राय की कब्रों के समान यहां की कब्रे भी छिछली तथा अण्डाकार बनाई जाती थी। पश्चिम दिशा की ओर करके मृतक को कब्र में रखने की प्रथा थी। इसके कुछ अपवाद भी मिले हैं जिनमें दिक्–स्थापना पूर्व–पश्चिम मिला है। कुछ कंकालों को दक्षिण पूर्व से उत्तर–पश्चिम दिशा में था। यहां से युग्मित समाधियों के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। जिनमें से प्रत्ये समाधि में एक स्त्री तथा एक पुरुष साथ–साथ दफनाएं हुए मिले हैं। सामान्यतः हाथ कंकाल के धड़ के समानान्तर रखे हुए मिले हैं। कभी–कभी एक हाथ शरीर के

समानान्तर तथा दूसरा पेट पर अथवा जांघ पर रखा हुआ मिला है। एक नर–कंकाल के दोनों पैर ऊपर की तरफ मुड़े हुए थे तथा बाये हाथ को कमर के नीचे तथा दाहिने हाथ को दोनों जांघों के बीच में रखा गया था। महदहा के प्रथम काल खण्ड से तीन मानव समाधियां मिली हैं जिनमें चार कंकाल प्राप्त हुए हैं क्योंकि पहली समाधि एक युग्म समाधि है। इस युग्मित समाधि से दो कंकाल मिले हैं। जिसमें पुरुष को दाहिनी ओर तथा स्त्री को बायीं और लिटाकर दफनाया गया था। सभी कंकाल पश्चिम की ओर करके दफनाये गए थे। अन्य दो समाधियों से एक–एक कंकाल मिले हैं। इस कालखण्ड के चार में से दो पुरुष कंकाल और दो स्त्री कंकाल थे। सभी कंकाल वयस्क लोगों के थे। दूसरे कालखण्ड से दो समाधियां मिली हैं जिनमें से एक समाधि में पुरुष का एक कंकाल तथा दूसरी युग्म–समाधि में एक स्त्री तथा एक पुरुष के कंकाल मिले हैं। युग्म समाधि में पुरुष के कंकाल के ठीक ऊपर स्त्री का कंकाल दफनाया हुआ मिला है। ये सभी कंकाल पश्चिम–पूर्व की ओर लिटाकर दफनाये गये थे। पुरुष कंकाल हिरण के श्रृंगों की बनी पांच मुद्रिकाओं की एक माला गले में पहने हुए था। युग्म समाधि का पुरुष श्रृंगों की बनी हुई 12 मुद्रिकाओं की एक माला गले में पहने हुए तथा बायें कान में श्रृंग का बना हुआ एक गोल कुण्डल धारण किये हुए था। [4]

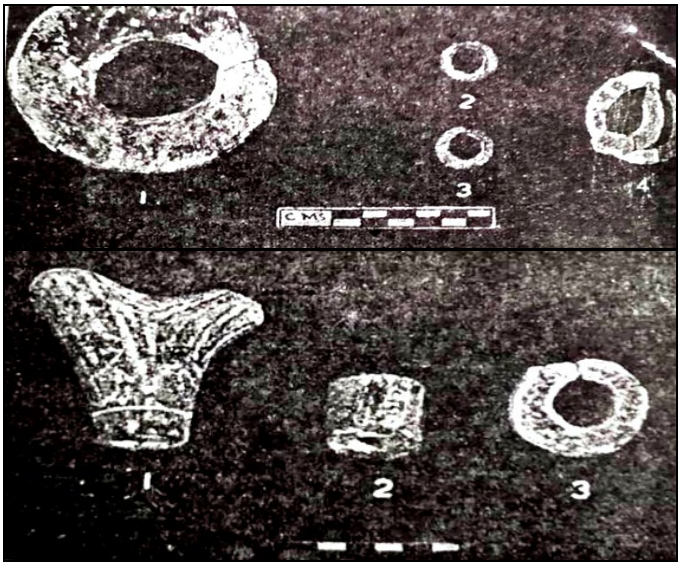

चित्र 2: अस्थि आभूषण एवं अस्थियां जी. आर. शर्मा (1980) के सौजन्य से

तीसरे कालखण्ड से 10 समाधियां मिली हैं जिनमें से प्रत्येक में एक–एक मानव कंकाल मिला है। एक महिला कंकाल के साथ सींग की बनी हुई दो गुरियां तथा सींग की एक बाण मिला है तथा दूसरी महिला के साथ कछुआ की खोपड़ी का एक टुकड़ा रखा हुआ मिला है। यहां के चौथे कालखण्ड से सबसे अधिक 13 समाधियां मिली हैं जिनमें से प्रत्येक में एक–एक मानव कंकाल दफनाया हुआ मिला है। तेरह में से दस कंकाल वयस्क लोगों के थे, एक वयोवृद्ध व्यक्ति का तथा दो बच्चों के कंकाल थे। तेरह में छह का सिर पश्चिम की ओर तथा पांच का सिर पूर्व दिशा की ओर करके दफनाया गया था। दो महिलाओं तथा एक पुरुष के साथ अन्त्येष्टि सामग्री रखी हुई मिली है। महदहा के 30 कंकालों में से 17 पुरुष तथा 07 स्त्रियां और 6 के लिंग की पहचान नहीं हो सकी है। मृत्यु के समय पुरुषों की आयु 18 से 40 वर्ष स्त्रियों की 30 से 64 वर्ष आयु थी।

उत्खनन में 35 गर्त चूल्हे मिले हैं इनमें से कुछ गर्त चूल्हों के भीतरी भाग को लीप–पोत कर चिकना बनाया गया था। गर्त–चूल्हों से राख, जली हुई मिट्टी तथा पशुओं की जली हुई हड्डियां मिली है। महदहा के गर्त चूल्हे में भैंसे का सींग युक्त पूरा सिर मिला है। इससे यह पता चलता है कि मांस को भूनकर खाने का प्रमुख साक्ष्य है। पशुओं की जो हड्डियां प्राप्त हुई हैं उनके परीक्षण से स्पष्ट है कि ये लोग सांभर, चीतल, बारहसिंघा, जंगली सुअर, गैंडा, हाथी आदि पशुओं से परिचित थे जो उनकी भोज्य सामग्री भी थे।

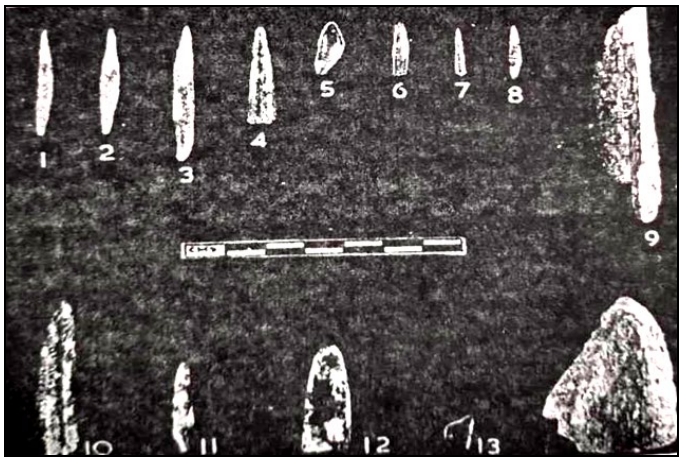

चित्र 3: अस्थि उपकरण जी. आर. शर्मा (1980) के सौजन्य से

यहां से लघु पाषाण उपकरण अपेक्षाकृत कम संख्या में मिले हैं। प्रमुख उपकरणों में से ब्लेड, खुरचनी, बेधक, चान्द्रिक, त्रिभुज तथा समलम्ब चतुर्भुज प्रल्लेखनीय है। सींग तथा श्रृंग के उपकरणों में बाणाग्र, बेधक, खुरचनी,आरी, रूखानी, चाकू आदि हैं। श्रृंग के आभूषणों में कुण्डल तथा मुद्रिकाएं प्रमुख हैं। प्रस्तर उपकरणों की अपेक्षा यहां पर हड्डी के उपकरण अधिक संख्या में मिले हैं। सम्भवतः पत्थर के अभाव के कारण ये लोग हड्डी का प्रयोग अधिक करने लगे थे। सिल–लोढ़े की प्राप्ति से यह प्रतीत होता है कि जंगली घास के दानों को पीसकर भोज्य सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता था। पुरापुष्पपरागण के विश्लेषण से हरे–भरे घास के मैदान के संकेत मिलते हैं।

दमदमा:

महदहा से लगभग 5 किमी उत्तर–पश्चिम में प्रतापगढ़ जिले के पट्टी तहसील के वारीकला नामक गांव के पास दमदमा का मध्य पाषाणिक पुरास्थल स्थित है। सई नदी की एक सहायक पीली नदी में मिलने वाले तम्बूरा नाले की दो धाराओं के संगम पर स्थित है। यह नाला वास्तव में प्राचीन गोखुर झील है। यह पुरास्थल 8750 वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है। इस पुरास्थल की खोज सन् 1978 में हुई थी। यहां पर राधाकान्त वर्मा, बी0डी0 मिश्र, जे0एन0 पाण्डेय एवं जे0एन0 पाल के निर्देशन में उत्खनन किया गया था। यहां पर उत्खनन कार्य पांच सत्रों में किया गया है। उत्खनन के लिए तीन स्थल चिन्हित किए गए थे, जो टीले के पूर्वी, मध्यवर्ती एवं पश्चिमी क्षेत्रों में अवस्थित थे। इनमें मध्यवर्ती तथा पश्चिमवर्ती एवं पश्चिमी क्षेत्रों से 41 शवाधान ज्ञात हुए हैं। इनमें [5] शवाधान संख्या; टप्ए ग्ग्ए ग्टप्ए ग्ग्ए ग्टप्द्ध युग्मित है तथा शवाधान संख्या; ग्टप्प्द्ध में तीन कंकाल मिले थे। इन सभी में 30 कंकालों का दिक्विन्यास पश्चिम–पूर्व, तीन का पूर्व–पश्चिम, चार का दक्षिण–उत्तर से उत्तर–पूर्व दिशा में तथा चार कंकाल उत्तर–पूर्व में दक्षिण–पश्चिम में तथा एक उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व दिशा में किया गया था। अधिकांश विस्तीर्ण शवाधान हैं जिनमें कंकाल को पीठ के बल लिटाया गया है। दो कंकाल पेट के बल तथा दो कंकालों को पैर मोड़कर दफनाया गया। श्रृंग के बने हुए बाण तथा आभूषण और पशुओं की हड्डियां अन्त्येष्टि सामग्री के रूप में रखी गई थी। अधिकांश कंकाल वयस्क स्त्री–पुरुषों के थे जिनकी आयु का औसत 18–40 वर्ष के बीच आंकलित किया गया है। बच्चों के कंकाल यहां से नहीं मिले हैं। ये लोग हुष्ट–पुष्ट थे। पुरुषों की लम्बाई 173.93 सेमी से 192.08 सेमी थी। सभी कब्रे छिछली तथा दीर्घ अण्डाकार सी हैं। युग्म शवाधान अधिक चौड़े हैं। सभी कब्रगाह आवासीय क्षेत्रों में ही हैं। बहुसंख्यक लघु पाषाण उपकरण

दमदमा के उत्खनन से प्राप्त होते हैं जिसके अन्तर्गत ब्लेड, फलक, क्रोड, माइक्रो–ब्यूरिन के अतिरिक्त विभिन्न कार्यों में उपयोग के प्रभाव से युक्त ब्लेड, पुनर्गठित ब्लेड, समानान्तर एवं कुण्ठित पार्श्व वाले ब्लेड, समद्विबाहु, विषम बाहु त्रिभुज, समलम्ब चतुर्भुज विभिन्न प्रकार की खुरचनियां, छिद्रक, चान्द्रिक आदि सम्मिलित हैं। इनका निर्माण चाल्सेडनी, चर्ट, क्वार्ट्ज, अगेट, कार्नेलियन आदि से किया जाता था। पाषाण उपकरणों के अतिरिक्त हड्डी के उपकरणों का भी निर्माण ये लोग करते थे। यहां से प्राप्त पुरावशेषों में सिल तथा लोढ़े विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये सभी स्तरों से प्राप्त हुए हैं।

शवाधानों के अतिरिक्त विभिन्न कालों से सम्बन्धित गर्त अथवा छिछले चूल्हे भी चिन्हित किए गए थे। यहां से गैंडा, हाथी, चीतल, सांभर, बारहसिंघा तथा जंगली सुअर आदि वन्य पशुओं की हड्डियां प्राप्त होती हैं। ये लगभग 90ः पशु अस्थियां जली हुई अथवा अधजली है। इससे यह प्रतीत होता है कि मध्य पाषाण काल के लोग पशुओं का मांस भूनकर खाते थे। पशुओं के अलावा अनेक पक्षियों तथा मछली, कछुआ की हड्डियां भी काफी बड़ी संख्या में मिली हैं। बेर की अधजली गुठलियां से यह पता चलता है कि इसका उपयोग भोज्य सामग्री के रूप में करते थे।

निष्कर्ष

उपरोक्त मत से स्पष्ट होता है कि गंगा घाटी से मानव की गतिविधियों के विषय जानकारी मिलती है कि मानव अपने हथियार, आवास और शव प्रथा को कैसे बनाते थे। अतः हमें यह पता चलता है कि इस काल का मानव को विभिन्न प्रकार की जानकारी हो गई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, डॉ0 जय नारायण, पुरातत्व विमर्श, प्राच्य विद्या संस्थान, इलाहाबाद, 2017 पृष्ठ–303।
2. वर्मा, डॉ0 राधाकान्त, भारत की प्रस्तर युगीन संस्कृतियां, परम ज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016, पृष्ठ 296–297।
3. शर्मा, जी0आर, मेसोलिथिक लेक कल्चर्स इन दि गंगा वैली, इण्डिया प्रो0 प्री0 हिस्टारिका सो0 वाल्यू 0390
4. पाण्डेय, डॉ0 जय नारायण, पुरातत्व विमर्श, प्राच्य विद्या संस्थान, इलाहाबाद, 2017 पृष्ठ–303।
5. वर्मा, डॉ0 राधाकान्त, भारत की प्रस्तर युगीन संस्कृतियां, परम ज्योति प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016 पृष्ठ–300–302।